प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश

Dr. Sabiha Khan

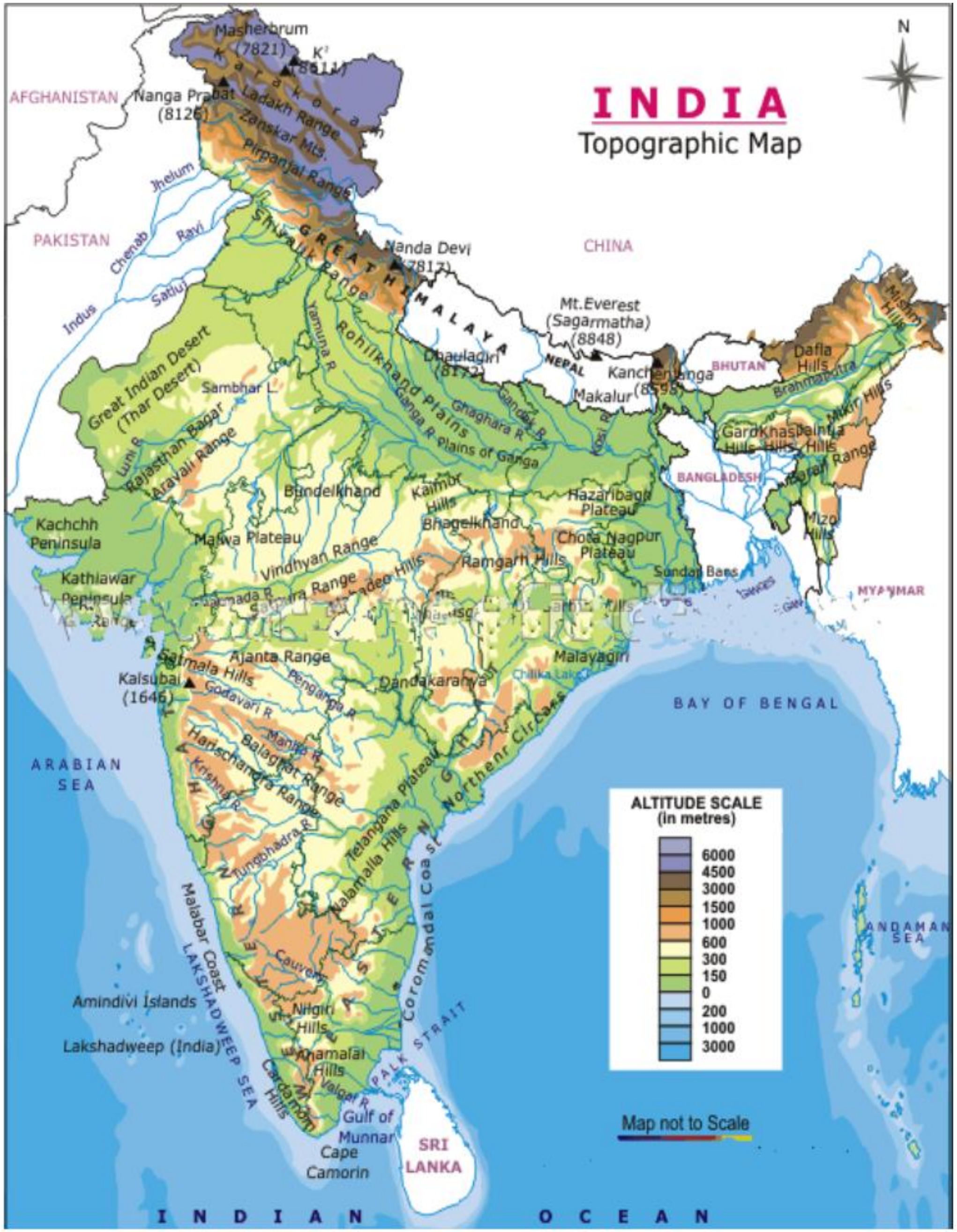

Source: Mapsof. net

- यह अति प्राचीन भूभाग है।
- इस भौतिक प्रदेश का विस्तार 16 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर है ।
- इसकी आकृति त्रिभुजाकार है।
- उत्तर में यह विशाल मैदान द्वारा तथा तीन ओर से समुद्र द्वारा गिरा हुआ है।
- यह देश का सबसे प्राचीन बड़ा भौतिक प्रदेश है एवं गोंडवाना लैंड का ही एक भाग है।
- इस पठारी प्रदेश में अनेक पर्वत मिलते हैं।
- इस पठार की समुद्र तल से औसत ऊंचाई लगभग 600 मीटर है।

विस्तार :

- इस पठार का विस्तार उत्तर में राजस्थान से लेकर दक्षिण में कुमारी अंतरीप तक फैला हुआ है जो लगभग 1700 किलोमीटर है।
- गुजरात से लेकर पश्चिम बंगाल तक 1400 किलोमीटर की चौड़ाई में विस्तृत है।
- इस भौतिक विभाग के अंतर्गत दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य-प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र-प्रदेश, तेलंगाना, तमिल-नाडु, केरल राज्य की भू-भाग सम्मिलित है।
- प्राकृतिक दृष्टि से इस की उत्तरी सीमा अरावली, कैमूर की पहाड़ियों तथा राजमहल की पहाड़ियों द्वारा सीमाकित होती है पूर्व में पूर्वी घाट तथा पश्चिमी पश्चिमी घाट इसकी सीमा बनाता है।

- **प्रायद्वीपीय पठार नर्मदा , सोन नदियों द्वारा पठार के छोटे-छोटे भागों में बट गया है।**

<u>1. मालवा का पठार</u> –

- **नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित है।**
- **इस पठार का ढाल उत्तर की ओर है।**
- **इस पठारी भाग में बेतवा, पार्वती, नीवज, कालीसिंध, चंबल नदियां प्रवाहित होती है, जो आगे यमुना में मिल जाती है।**
- **मालवा का पठार लावा से निर्मित काली मिट्टी का समप्राय मैदान है, जहां उर्मिल मैदान देखने को मिलते हैं।**
- **पठार के उत्तर में ग्वालियर की पहाड़ियां प्रमुख है।**
- **इस पठार की उत्तरी व उत्तरी पूर्वी सीमा पर क्रमशः बुंदेलखंड व बघेलखंड के पठार स्थित है।**
- **पठार का उत्तरी भाग चंबल और उसकी सहायक नदियों के कारण बीहड़ के रूप में परिवर्तित हो गया है।**

2. बुंदेलखंड व बघेलखंड का पठार:

- मालवा पठार का उत्तरी -पूर्वी भाग में बुंदेलखंड व बघेलखंड के नाम पठार के नाम से जाना जाता है।
- यह पठार उत्तर में यमुना के मैदान के निकट समाप्त हो जाता है।
- बुंदेलखंड के पठार में चंबल एवं यमुना की सहायक नदियों के कारण बीहड़ का निर्माण हुआ है, जिसके कारण मैदान असमतल व अन-उपजाऊ बन गया है।
- यह पठार ग्वालियर की पहाड़ियों तथा विंध्याचल श्रेणी के मध्य फैला हुआ है।
- यह प्राचीनतम बुंदेलखंड नीस से बने हुए हैं, जहां यत्र -तत्र ग्रेनाइट एवं बालू -पत्थर के टीले एवं पहाड़ियां मिलती है।
- इस पठार की औसत ऊंचाई 300 से 600 मीटर है।

- विंध्य श्रेणी (कैमूर व बाड़मेर)की पहाड़ियों के पूर्व में बघेलखंड का पठार फैला हुआ है।
- इसके उत्तर में सोनपुर पहाड़ियां तथा दक्षिण में रामगढ़ की पहाड़ियां स्थित है।
- इस पठार के पश्चिमीभाग में बलुआ पत्थर व चूने के पत्थर पाए जाते हैं।
- पठार के पूर्वी भाग में ग्रेनाइट की चट्टाने पाई जाती है।

3. छोटा नागपुर का पठार

- **यह पठार झारखंड राज्य के पलामू, धनबाद, गया, हजारीबाग व रांची जिलों में जिले में फैला हुआ है।**
- **पठारी प्रदेश की प्रमुख नदियां – महानदी, सोन, स्वर्णरेखा व दामोदर है, जो गहरी घाटियों में से प्रवाहित होकर अलग-अलग दिशाओं में बहती है।**
- **सोन नदी पठार के उत्तर पश्चिमी भाग में बहती हुई गंगा में मिल जाती है।**
- **दामोदर नदी पठार के मध्य भाग में बहती है, जिसकी दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर है। दामोदर नदी घाटी एक भ्रंश के रूप में है।**
- **महानदी, इस पठार की दक्षिणी सीमा बनाती है एवं दक्षिण पूर्व दिशा में प्रवाहित होती है।**
- **राजमहल की पहाड़ियां इस पठार की उत्तरी सीमा बनाती है।**

- यह पठार कई भागों में बटा हुआ है।
- दामोदर नदी के उत्तर में हजारीबाग का पठार एवं कोडरमा का पठार शामिल है।
- दामोदर नदी के दक्षिण में रांची का पठार स्थित है।
- इस पठारी भाग में ग्रेनाइट नीस की चट्टाने पाई जाती है।
- इस प्रकार की औसत ऊंचाई 700 मीटर है।
- पठार का किनारी भाग कटा फटा है।
- यह पठार खनिज पदार्थों मैं धनी है ,यहां पर भारत के प्रमुख खनिज- बॉक्साइट, अभ्रक व कोयला भारी मात्रा में पाया जाता है।

4. मेघालय का पठार

- गंगा नदी के पूर्व में स्थित है।
- पठार की चट्टानी संरचना नागपुर पठार के जैसी है ।
- इस पठार का उत्तर भी ढाल खड़ा है जहां ब्रह्मपुत्र नदी बहती है तथा जहां मिकीर पहाड़ियां विस्तृत है ।
- इस पठार का दक्षिणी ढाल धीमा है जहां गारो, खासी, जयंतिया प्रमुख पहाड़िया मिलती है ।

5. दक्कन का पठार

- इसे महाराष्ट्र का पठार भी कहते हैं।
- इस पठार का कुल क्षेत्रफल 500000 वर्ग किलोमीटर है।
- इस पठारी क्षेत्र के अंतर्गत मध्य-प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र- प्रदेश, तेलंगाना राज्य आते हैं।
- इस पठार की पूर्वी सीमा अमरकंटक व सरगुजा की पहाड़ियां बनाती है तथा पश्चिमी सीमा कच्छ के रण तक फैली हुई है।
- यह पठार दक्षिण में बेलगांव तथा दक्षिण पूर्व में राजमहल जी तक फैला हुआ है।
- ताप्ती नदी इसकी उत्तरी सीमा बनाती है।

- **यह पठार प्रमुख रूप से बेसाल्ट की चट्टानों से बना हुआ है।**
- **जहां लावा की गहराई 2000 मीटर से अधिक तक पाई जाती है।**
- **इस पठार का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशा में पाया जाता है।**
- **इस पठार में गोदावरी एवं उसकी सहायक नदियां प्रवाहित होती है।**
- **इस पठारी भू-भाग पर प्राचीन कठोर एवं परिवर्तित धारवाड़ चट्टानों का विस्तार सर्वाधिक पाया जाता है।**
- **यह पठार खनिज पदार्थों की दृष्टि से धनी है।**

5.A. तेलंगाना का पठार-

- गोदावरी नदी पठार को दो भागों में बांटती है।
- नदी के उत्तरी भाग पर पहाड़ियां पाई जाती है, जहां वर्धा नदी बहती है ।
- नदी का दक्षिणी भाग पर उर्मिल मैदान में मिलते हैं ।

5.B. कर्नाटक का पठार-

- 600 मीटर समोच्च रेखा इस पठारी भाग को दो भागों में बांटती है।
- उत्तरी भाग में कृष्णा एवं तुंग-भद्रा नदियां प्रवाहित होती है।
- दक्षिणी भाग को मैसूर का पठार भी कहते हैं।
- पठार के पश्चिम में पश्चिमी घाट तथा पूर्व में पूर्वी घाट स्थित है।
- घाट की दक्षिणी सीमा नीलगिरी की पहाड़ियां द्वारा बनती है।
- पठार के पश्चिमी भाग मलनाड नाम से भी जाना जाता है ,जो एकपहाड़ी क्षेत्र है तथा जिसकी औसत ऊंचाई 1000 मीटर है।
- पठार के पूर्वी भाग में उर्मिल मैदान पाए जाते हैं।

प्रायद्वीपीय पठार की पर्वत मालाएं:

विंध्याचल पर्वत माला-

- इस पर्वत श्रृंखला का विस्तार पश्चिम में गुजरात राज्य से उत्तर पूर्व दिशा की ओर बढ़ता हुआ उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर और सोनभद्र जिलों तक है।
- पर्वत श्रृंखला का विस्तार नर्मदा नदी के समानांतर फैला हुआ है।
- यह पर्वतमाला विंध्याचल भारनेर, कैमूर व पारसनाथ पहाड़ियों का समूह है।
- यह पर्वत श्रंखला मालवा व बघेलखंड पठारो की क्रमशः दक्षिणी एवं पूर्वी सीमा बनाती है।

- यहां पर परतदार चट्टाने पाई जाती है, जिसमें लाल बलुआ पत्थर की प्रधानता है।
- पर्वत श्रंखला समुद्र तल से लगभग 750 से 1200 मीटर तक ऊंचा है।
- यह पर्वतमाला गंगा नदी के प्रवाह तंत्र को दक्षिण भारत की नदियों के प्रवाह तंत्र से अलग करता है।
- पर्वत श्रंखला के उतरी ढाल चपटे एवं इनसे निकलने वाली वाली नदियां गंगा प्रवाह क्रम में सहयोग देती है, जबकि दक्षिणी ढाल तीव्र एवं इनसे निकलने वाली नदियां दक्षिण भारत नदी प्रवाह क्रम में सहयोग करती है।

सतपुड़ा पर्वत माला :

- यह पर्वतमाला पश्चिम में राजपीपला की पहाड़ियों से प्रारंभ होकर पूर्व, उत्तर-पूर्व दिशा में आगे बढ़ कर महादेव, मैंकाल पहाड़ियों तक विस्तृत है।
- यह पर्वतमाला नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के मध्य स्थित है।
- इस की पूर्वी सीमा राजमहल की पहाड़ियों द्वारा सीमित है।
- इस पर्वतमाला में विस्तार एवं ग्रेनाइट चट्टानों की अधिकता है।
- इस पर्वतमाला की औसत ऊंचाई 760 मीटर है।

- **इस पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ है, जो 1350 मीटर ऊंची है, जो कि महादेव पर्वत पर स्थित है।**
- **इस पर्वत श्रेणी की दूसरी मुख्य चोटी अमरकंटक है, जो 1600 मीटर ऊंची है।**
- **सतपुड़ा पर्वत श्रेणी में नदियों द्वारा अनेक जलप्रपात बनाए गए हैं।**
- **नर्मदा नदी पर धुआंधार प्रपात प्रसिद्ध है।**
- **सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के उत्तरी भाग खड़े हैं जो कि एक भ्रंश घाटी का ही रूप है।**

अरावली पहाड़ियां :

- यह पर्वत श्रेणी गुजरात में ब्रह्म खेड़ा से प्रारंभ होकर राजस्थान से होती हुई दिल्ली तक फैली हुई है।
- इस पर्वत श्रेणी की दिशा दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है।
- इस पर्वत श्रेणी की कुल लंबाई 800 किलोमीटर है।
- इस पर्वत श्रेणी का दक्षिण पश्चिमी हिस्सा चौड़ा एवं ऊंचा है जबकि उत्तर-पूर्वी हिस्सा सकरा एवं नीचा है।
- दिल्ली के निकट सिर्फ यह टीलो के रूप में रह जाती है।

- **यह पर्वत श्रेणी मुख्य जल विभाजक का कार्य करती है।**
- **इसकी पश्चिमी ढाल से निकलने माही एवं लूणी नदियां बहती हुई अरब सागर में मिल जाती है।**
- **जबकि पूर्वी ढाल से निकलने वाली बनास नदी चंबल की सहायक है, जोकि गंगा नदी तंत्र का एक हिस्सा है, अंत में बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।**
- **इस पर्वत श्रंखला की सबसे ऊंची चोटी गुरु (1722 मीटर) है।**
- **इस पर्वत श्रंखला की ऊंचाई 300 से लेकर 900 मीटर के बीच पाई जाती है।**

- पर्वत श्रृंखला का दक्षिणी भाग जो कि उदयपुर के निकट स्थित है, जरगा पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है। जिसकी ऊंचाई लगभग 1220 मीटर है।
- अलवर के निकट अरावली पर्वतों को हर्षनाथ की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है, जो 670 मीटर ऊंचे हैं।
- दिल्ली में दिल्ली की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है, जहां इनकी ऊंचाई 304 मीटर है।

पश्चिमी घाट:

- इन्हें सह्याद्री भी कहते हैं।
- यह दक्कन के पठार की पश्चिमी सीमा बनाते हैं हुए पश्चिमी तट के समानांतर फैले हुए हैं।
- उत्तर में ताप्ती नदी से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक 1600 किलोमीटर की लंबाई में फैले हुए हैं।
- समुद्र तट की ओर इनका ढाल तीव्र है।
- उत्तर में यह कम चौड़े है जबकि दक्षिणी भाग में यह अत्यधिक चौड़े हैं।
- संपूर्ण घाट को धरातलीय विभिन्नताओं एवं संरचनाओं के अनुसार तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है:-

A. उत्तरी सहयाद्री:

- ताप्ती नदी से लेकर गोवा के उत्तर पूर्व में माल प्रभा नदी के उद्गम तक फैले हुए हैं।
- 650 किलोमीटर की लंबाई में फैले हुए हैं।
- इस भाग की औसत ऊंचाई 550 मीटर है।
- इस भाग में गोदावरी, भीमा, कृष्णा, उर्रा नदियों के उद्गम क्षेत्र स्थित हैं।
- इस भाग की प्रमुख चोटियां - कलसूबाई (1646 मीटर), साल्हेर (1567 मीटर), महाबलेश्वर (1438 मीटर) है।
- इस भाग में दो प्रमुख दर्रे हैं थालघाट एवं भोरघाट
- थालघाट - यह दर्रा मुंबई नासिक मार्ग पर स्थित है।
- भोरघाट - यह दर्रा मुंबई पुणे मार्ग पर स्थित है।

B.मध्य सहयाद्री:

- माल प्रभा नदी के उद्गम से लेकर पालघाट दर्रे तक विस्तृत है।
- इसके आगे पश्चिमी घाट हैं चौड़े हो जाते हैं और पूर्वी घाट में मिल जाते हैं।
- इस भाग की कुल लंबाई 650 किलोमीटर है।
- इस भाग में धरातल काफी उबड़ खाबड़ है एवं इस भाग में कोई भी दर्रा स्थित नहीं है।
- इस भाग की औसत ऊंचाई 1220 मीटर है।
- यहां की प्रमुख चोटियां कुद्रेमुख (1892 मीटर), पुष्पगिरी (1714 मीटर) है।
- इस भाग में ग्रेनाइट एवं निस चट्टानों की अधिकता पाई जाती है।
- इस भाग के पूर्व भी ढाल से तुंगभद्रा एवं कावेरी नदियां प्रवाहित होती है।

C. दक्षिणी सहयाद्री :

- नीलगिरी की पहाड़ियों से लेकर कन्याकुमारी तक फैले हुए हैं।
- इस भाग का कुल विस्तार लगभग 290 किलोमीटर है
- इस भाग का सर्वोच्च शिखर अनाईमुडी (2695 मीटर) है, जोकि अन्नामलाई पर्वत पर स्थित है।
- इस श्रेणी के उत्तर पूर्व में पालनी की पहाड़ियां तथा दक्षिण में इलायची की पहाड़ियां विद्यमान है।

पूर्वी घाट:

- यह दक्कन के पठार की पूर्वी सीमा बनाते हैं हुए पूर्वी तट के समानांतर फैले हुए हैं।
- इनका विस्तार उत्तर में महानदी से लेकर दक्षिण में नीलगिरी पहाड़ियों तक है।
- नीलगिरी पहाड़ियों के निकट इन का अपना अलग अस्तित्व समाप्त हो जाता है।
- इस पर्वतीय भारत की औसत ऊंचाई 615 मीटर है।
- पूर्वी घाट की उत्तर में औसत चौड़ाई लगभग 190 किलोमीटर जबकि दक्षिण में 75 किलोमीटर है।
- इस पर्वत श्रेणी को नदियों ने अनेक स्थानों पर काट दिया है जिसके कारण कई छोटी-छोटी पर्वत श्रृंखलाएं मिलती है।
- उत्तर से दक्षिण की ओर इन पहाड़ियों को शिवराय की पहाड़ियां, जावादी, नल्लामलाई, पालकोंडा और नीलगिरी के नाम से जानते हैं।
- यह पर्वत श्रेणियां गोदावरी व कृष्णा नदियों के डेल्टा के बीच बिल्कुल समाप्त हो गई है।

- पूर्वी घाट वास्तविक पर्वतों के रूप में महानदी और गोदावरी नदियों के बीच के भूभाग में ही मिलते हैं।
- इस भूभाग में इनकी चौड़ाई उत्तर से दक्षिण की ओर कम होती जाती है।
- इस भाग की औसत ऊंचाई 920 मीटर है।
- यहां का सबसे ऊंचा स्थान विशाखापट्टनम (1680 मीटर) है, दूसरी मुख्य चोटी महेंद्र गिरी (1501 मीटर) है।
- यह भाग चरनोकाइट्स व खंडो लाइट्स चट्टानों से बने हुए हैं।

- गोदावरी नदी के बाद पूर्वी घाट, कुडप्पा और कुरनूल जिलों में लगातार श्रेणी के रूप में देखने को मिलते हैं।
- जहां इन्हें नल्ला मलाई पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।
- जो लगभग 900 से लेकर 1100 मीटर ऊंचे हैं।
- नल्ला मलाई श्रेणी की पहाड़ियां क्वार्टजाईट व स्लेट चट्टानों से बनी हुई है।
- श्रेणी का दक्षिणी भाग पालकोंडा श्रेणी के नाम से जाना जाता है।

- तमिलनाडु राज्य में पश्चिम दिशा व दक्षिण-पश्चिम दिशा में अनेक पर्वत श्रेणियां पाई जाती है।
- तिरुवरूर जिले में जवादी पहाड़ियां, विल्लुपुरम जिले में जिंजी पहाड़ियां, तिरुचिरापल्ली जिले में कोलामलाई व पंचममलाई की पहाड़ियां, सलेम जिले में शिवराय वा गोड्डूमलाई तथा कोयंबटूर जिले में नीलगिरी पहाड़ियां पाई जाती है।
- यह सभी पहाड़ियां पूर्वी घाट का ही विस्तृत रूप है।
- यह पहाड़ियां लगभग 1200 मीटर ऊंची है तथा चरनोकाइट् चट्टानों से बनी हुई है।
- कावेरी व पेनार नदियों के मध्य मेला गिरी पर्वत श्रेणी स्थित है जो कि चंदन के वनों के लिए विख्यात है।

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.